ऊ (उ+उ)। असमान ह्रस्व स्वर के मेल से संयुक्त स्वर चाहे संधि-स्वर बनेला जईसे-ए (अ+इ), ऐ (अ+ए), ओ (अ+उ), औ (अ+ओ)। भोजपुरी में प्रयुक्त एह दसो स्वर वर्ण के कई-कई गो उच्चारण रूप बा।

एह दसो स्वर वर्ण के तीन भाग में बाँटल गइल बा-

| | | |
|---|---|---|
| ह्रस्व स्वर वर्ण | - | अ, इ, उ |
| दीर्घ स्वर वर्ण | - | आ, ई, ऊ |
| संयुक्त स्वर वर्ण (संधि स्वर) | - | ए, ऐ, ओ, औ |
| गुण स्वर | - | ए, औ |
| वृद्धि स्वर | - | ऐ, औ |

## स्वर वर्ण के अन्य भेद

निरनुनासिकता आ अनुनासिकता के आधार पर स्वर वर्ण के दूगो भेद होला-(क) साधारण (सामान्य) चाहे निरनुनासिक स्वर वर्ण आ (ख) अनुनासिक चाहे सानुनासिक स्वर वर्ण।

जवना स्वर के उच्चारण में मुँह से पूरा-पूरा साँस निकले आ नाक के मदद ना लेवे के पड़े, ओकरा के साधारण चाहे निरनुनासिक स्वर कहल जाला जइसे- अ, आ, ई, ई, उ, ऊ वगैरह।

जवना स्वर के उच्चारण मुँह के साथ-साथ नाको से कुछ हवा (साँस) निकले, ओकरा के अनुनासिक चाहे सानुनासिक स्वर कहल जाला

जइसे- अं, अं। अनुनासिक स्वर के लिखित रूप में स्वर के ऊपर अनुस्वार (-) के चिह्न दिहल जाला आ अनुनासिके स्वर में जब हवा (साँस) नाक से आउरो कम अंश (अनुस्वार के उच्चारण वाला अंशो से कम) में बाहर निकले तब ओकरा खातिर स्वर वर्ण के ऊपर चन्द्रविन्दु (ँ) के चिह्न लगावल जाला। उदाहरण खातिर अनुस्वार वाला स्वर वर्ण-अं (अंगूर, अंतरा) आ चन्द्रविन्दु वाला स्वर वर्ण-अँ (अँतरी, आँठी, अँठइल, अँटिआ)।

एह तरह से भोजपुरी में स्वर वर्ण के कुल संख्या बारह होता-अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ, अं, अँ। अइसे भोजपुरी में ऐकार अउर औकार वाला शब्दन के अभाव बा बाकिर संस्कृत अउर हिन्दी के प्रभाव से आधुनिक भोजपुरी में से अउर और वाला शब्दन के प्रयोग हो रहल बा। एकरा अलावे भोजपुरी में 'ऋ' स्वर के अस्तित्व नइखे, बाकिर संस्कृत अउर हिन्दी से आइल शब्दन खातिर 'ऋ' स्वर लिखाय-पढ़ाय लागल बा। अइसे भोजपुरी भाषी एह 'ऋ' स्वर के उच्चारण 'रि' जइसन करेलन।

जाति के आधार पर स्वर वर्ण के दू भाग में बाँटल गइल बा- सजातीय चाहे सवर्ण स्वर आ विजातीय चाहे असवर्ण स्वर।

समान स्थान आ प्रयत्न से उच्चरित स्वर सजातीय चाहे सवर्ण स्वर कहल जाला, जइसे-इ, ई।

अलग-अलग स्थान आ प्रयत्न से उच्चरित स्वर के विजातीय चाहे असवर्ण स्वर कहल जाला जइसे-अ, ऊ।

## व्यंजन वर्ण

भोजपुरी में उच्चरित होखेवाला मूल व्यंजन वर्ण के संख्या ***32 (बतीस)*** गो बा- क्, ख्, ग् घ्, ङ्, च्, छ्, ज्, झ्, ञ्, ट, ठ्, ड्, ढ्, ढ़्, द्, ढ़्, म्, क्, द्, ध्, प्, फ्, ब्, भ्, म्, य्, र्, ल्, व्, स्, ह्।

भोजपुरी के अपना मूल शब्दन में ण्, श्, ष् व्यंजन अउर क्ष्, त्र, ज्ञ् संयुक्त व्यंजन वर्ण के अस्तित्व नइखे, बाकी संस्कृत अउर हिन्दी के प्रभाव से आधुनिक भोजपुरी में एह व्यंजन वर्ण के प्रयोग हो रहल बा। एकरा अलावे भोजपुरी में प्रयुक्त होखेवाला कुछ खास संयुक्त व्यंजन बाड़े स। जइसे-ङ् ह (खङ्ह, गेङ्हवा), न्ह (रीन्हल, अँउन्हल, मुन्हारे, चोन्हाइल), म्ह (थम्हल, थाम्हल, जम्हुआइल), ल्ह (अल्हर, आल्हा, कुल्ह, काल्ह), र्ह/ई (गर्ह्ल/गईल, मर्ह्/मर्हि, लेंर्ह्ा, मार्ह्ा, कोर्ह्ी)।

## व्यंजन वर्ण के भेद

व्यंजन वर्ण के उच्चारण में भीतर से आवेवाली हवा (साँस) कंठ से ओठ तक कहीं ना कहीं हलुके रोकावट के जवरे बाहर निकलेले, जवना के आधार पर व्यंजन वर्ण के तीन गो भेद कइल गइल बा- स्पर्श (वर्गीय), अन्तःस्थ अउर उष्म।

## व्यंजन वर्ण के अउर भेद

उच्चारण में वायु प्रक्षेप के दिसाई-व्यंजन के दूगो भेद होला- अल्पप्राण आ महाप्राण।

***अल्पप्राण***- अल्प मतलब थोड़ा आ प्राण मतलब साँस (हवा के शक्ति)। जवना व्यंजन के उच्चारण में बहुते कम वायु के प्रयोग होय चाहे जवना व्यंजन के उच्चारण में 'ह' के मेल ना हो, ऊ अल्प प्राण व्यंजन कहल जाला, जइसे- क्, ग्, ङ्, च्, ज्, ञ्, ट्, ड्, त्, द्, न्, प्, ब्, म्, य्, र्, ल्, व्। हर वर्गीय व्यंजन के पहिला, तिसरका, पाँचवा व्यंजन आ य्, र्, ल्, व्।

***महाप्राण***- जवना व्यंजन के उच्चारण में साँस बल अल्प प्राण से कुछ अधिक लागे आ ओकर उच्चारण 'ह्' सहित होय, ऊ महाप्राण व्यंजन कहल जाला, जइसे- ख्, ध्, छ्, झ्, ण्, ढ्, थ्, ध्, फ, भ्, स्, ह्, ङ्, ह्, न्ह्, म्ह्, र्ह, ल्ह्।

नाद के दिसाईं वर्ण के दूगो भेद होला-घोष आ अघोष।

***घोषवर्ण***- जवना वर्ण के उच्चारण में स्वरतंत्री सब आपुस में झंकृत होय, ऊ घोष वर्ण कहल जाले, जइसे-सब स्वरवर्ण वर्गीय व्यंजन के तीसरा, चउथा, पाँचवाँ व्यंजन, चारो अन्तःस्थ आ ह् (ऊष्म व्यंजन)-अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ, ग्, घ्, ङ्, ज्, झ्, ञ्, ड्, ढ्, द्, ध्, न्, ब्, भ, म्, य्, र्, ल्, व्, ह्।

***अघोषवर्ण***- जवना वर्ण के उच्चारण में स्वरतंत्री सब घोष वर्ण के उच्चारण जइसन झंकृत ना होय, ऊ अघोष वर्ण कहाला जइसे-क्, ख्, च्, छ्, ट्, ठ्, त्, थ्, प्, फ्, श्, ष्, ह।

### अक्षर

मुखरता के आधार पर अक्षर 'अ+क्षर' चाहे 'अक्ष+र' के रूप में बोलल जा सकेला। अ+क्षर वाला रूप में 'अ' ना के अर्थ में आ 'क्षर' क्षरण के अर्थ में बा, अर्थात् जवना के क्षरण ना होय, ऊ अक्षरं न क्षरं विद्यात्। क्षयिते न क्षरतीति वाक्षरम्। 'अक्षर' शब्द 'क्षर' आ 'क्षरि' दूनों धातुअन से निष्पन्न मानल गइल बा। एह दूनों से उहे अर्थ निकलेला, जवना के क्षरण ना होय।

कालक्रम से अक्षर के अर्थ बदलत रहल बा। 'अक्षर' 'वाक्'के अर्थ में भी प्रचलित रहल बा। साँच पूंछी त अक्षर शब्द के विधायक तत्व ह। क, ख, ग, घ वगैरह अक्षर ह। क्, ख्, ग्, घ् वगैरह ध्वनि वर्ण ह। एह तरह से व्यंजनन में स्वर के संयोग से अक्षर बनल बा। देवनागरी लिपि आक्षरिक बा।

## भोजपुरी के ध्वनि चाहे वर्ण के उच्चारण संबंधी विशेषता

### स्वर वर्ण के उच्चारण संबंधी विशेषता

#### 'अ'

भोजपुरी में 'अ' के उच्चारण में मुँह तनी गोल 'क' के होला। भोजपुरी अ के उच्चारण के लमहर विशेषता ई बा कि एकरा ह्रस्व मात्रा के भी विलम्बित उच्चारण होला, जवना से 'ऊ' दीर्घ नियन लागेला, जइसे- अच्छा-आच्छा, बच्चा-बाच्चा, कतना-कातना, फरका-फाराका वगैरह। एकरा में अंतिम 'आ' ध्वनि त पूरा उच्चरण वाला बा बाकी

पहिलेवाला अ ध्वनि विलम्बित उच्चारण के कारण आ के ओर झुकल सुनाता। एह अ के दीर्घ अ चाहे ह्रस्व आ के रूप में समझल जा सकेला। बाकिर अइसन उच्चारण के हू-बहू लिखे खातिर लिपि में ह्रस्व अ के एगो चिह्न बनावे के पड़ी, चाहे अर्ध 'अ' के चिह्न (विकारी-ऽ) के प्रयोग करे के पड़ी, - अऽच्छा, बऽच्चा, कऽतऽना वगैरह। एह तरह के लिपि से सामान्य लेखन में काफी कठिनाई होई एह से भाषा में अच्छा, बच्चा, कतना, फरकाशब्द रूप चले देवे के चाहीं।

## 'आ'

भोजपुरी में 'आ' के दूगो उच्चारण भंगिमा बा-दीर्घ आ-अउर ह्रस्व 'ऑ'। दीर्घ आ के उच्चारण में जीभ के बीच के भाग बहुत कम ऊपर उठेला। असल में ई केन्द्रीय स्वर ह। एकरा उच्चारण में ओठ गोल (वर्तुलाकार) ना होखे। जइसे-आन्हर, आरा, आम, आज के 'आ'। ह्रस्व 'आ' के उच्चारण स्थान दीर्घ आ के अपेक्षा कुछ ऊपर होला। अंगरेजी के कॉलेज, बॉल आ भोजपुरी के मॉरले, पॉरले जइसन शब्दन में मिलेला। भोजपुरी में ह्रस्व 'ऑ' के उच्चारण भइला के बावजूद लिखे में सामान्य दीर्घ 'आ' चाहे ओकरा मात्रा के व्यवहार कइल उचित होई।

## 'इ'

ह्रस्व 'इ' के उच्चारण स्थान भोजपुरी दीर्घ ई से कुछ नीचे होला जइसे-फिकिर, मरिचा, लइका, इसराज के इ पूर्ण ध्वनि ह। भोजपुरी में अति ह्रस्व ई के एगो स्थिति बा, जवन विशिष्ट अपूर्ण ध्वनि ह जे प्रायः अनुच्चरित जइसन रहेले, जइसे-जोइ, पोई, टोकि्, ओकि् वगैरह।

**'ई'**

'ई' संवृत दीर्घ अग्रस्वर ह। एकरा उच्चारण में जीभ के अगिला भाग एतना ऊपर उठ जाला कि कठोर के बहुत निकट पहुँच जाला। भोजपुरी 'ई' के उच्चारण स्थान मूल चाहे प्रधान स्वर ई के तुलना में कुछ नीचे होला, जइसे- ईजत, ईसर, ईश्वर, ईख वगैरह के ई।

भोजपुरी में प्रयुक्त दुअक्षरा तत्सम शब्दन में यदि पहिला अक्षर अकार आ दूसरका इकार के रहला पर दूसरका इकार के उच्चारण ईकार हो जाला आ ओकर वर्तनी प्रसंग आ प्रयोक्ता-भेद से तत्सम आ तद्भव दूनों रूप में चलेला-कवि-कबी, छवि-छबी, गति-गती, मति-मती। दू भा तीन अक्षरा शब्दन में पहिला अक्षर इकार आ अंतिम अक्षर अकार रहला पर पहिला इकार के उच्चारण दीर्घ 'ई' जइसन हो जाला, जइसे-दिन-दीन, टिन-टीन, तिल-तील, मिल-मील, चिलम-चीलम, पितर-पीतर वगैरह। बाकी अइसन उच्चारण चाहे वर्तनी से कबो-कबो शब्द के अर्थ बोध में बाधा उत्पन्न हो जाला। शब्द के वर्तनी भेद से अर्थभेद हो जाला-दिन-दीन, सिल-सील, पितर-पीतर वगैरह। अपवाद-क्रिया पद के उच्चारण में क्षिप्रता चाहे तीन अक्षर का शब्दन में बीचवाला अक्षर दीर्घ चाहे प उच्चारण के बलाघात पड़ला पर शब्द के पहिला अक्षर इकारे उच्चरित होला, जइसे-तिगर, निकल, दिनाय, पिसान, सिलेट, निकडल वगैरह।

**'उ'**

ह्रस्व 'उ' के उच्चारण स्थान दीर्घ ऊ से थोड़ा नीचे होला, एकरा उच्चारण में ओठ गोल त होला, बाकिर ओतना ना जेतना बंगला में होला,

जइसे-ससुर, भसुर, सासु वगैरह। भोजपुरी में अति ह्रस्व 'उ्' के भी स्थिति बा। जवना के उच्चारण में ओठ ह्रस्व 'उ' के अपेक्षा कम गोल होला। बाकी-ह्रस्व 'उ' शब्द के अंत में आ अति ह्रस्व 'उ्' शब्द के आदि में व्यवहृत ना होले, जइसे-उधार, उजार, ऊखि, रूखि, आजु वगैरह। भोजपुरी में अति ह्रस्व 'उ्' के व्यवहार वैकल्पिक रूप से ह्रस्व 'उ' आ दीर्घ 'ऊ' दूनों खातिर होला, जइसे - ऊ उठो, ऊ सूते वगैरह में उ्, सु एकर उदाहरण बा।

'ऊ'

ऊ संवृत दीर्घ पश्चस्वर ह। भोजपुरी के ऊरिद, दूध जइसन शब्द में एकर अस्तित्व पावल जाला।

'ऋ'

'ऋ' संस्कृत के आपन ध्वनि (वर्ण) ह । भोजपुरी में अपना शब्दन में एह ध्वनि के कवनो अस्तित्व नइखे। संस्कृत, हिन्दी के तत्सम-शब्दन के जब भोजपुरी में प्रयोग होला तब एकर व्यवहार कइल जाला बाकिर एकर उच्चारण 'रि' जइसन होला। भोजपुरी व्यंजन में 'ऋ' के मात्रा व्यंजन के नीचे चिह्न के रूप में लागेला चाहे व्यंजन में ह्रस्व इकार के मात्रा के बाद 'र' व्यंजन के प्रयोग होला-जइसे -कृपा-किरपा, सृजन-सिरजन, पृष्ठ-पिरिष्ठ कृष्ण-किरसन/किसुन वगैरह।

'ए'

ए अर्द्ध-विवृत दीर्घ अग्रस्वर ह। एकरा भोजपुरी उच्चारण में जीभ के उठल भाग मूल चाहे प्रधान 'ए' के अपेक्षा कुछ पीछे रहेला। भोजपुरी

में एकर दीर्घ, ह्रस्व आ अति ह्रस्व तीन उच्चारण भंगिमा बा। दीर्घ ए के उच्चारण-एड़ी, लेवा, खेवा, कलेवा, सगरे, अनेरे, देर, छेनी, केहू, एक वगैरह।

भोजपुरी में दीर्घ ए के उच्चारण के स्थिति-दू अक्षर वाला शब्द के आदि में, तीन अक्षर वाला शब्द के बीच में ए आवे अउर आगे-पीछे सब अक्षर ह्रस्व होखे त 'ए' के दीर्घ उच्चारण होला, जइसे-एक, केरा, केहू, एकर, तेतर, तेसर, देवर, नेवर, भदेस, सकेत, हुरपेटल वगैरह।

ह्रस्व 'ए' मूल स्वर 'ए' आ विवृत 'ए' के बीच में बा जइसे-एकहन, एकरार, ढेकुआरि वगैरह।

भोजपुरी के तीन अक्षर वाला शब्द के आदि ए रहे अउर दोसरका चाहे तिसरका अक्षर चाहे दूनों अक्षर दीर्घ होखे त 'ए' ह्रस्व उच्चरित होला, जइसे- केराव, घेराव, नेबार, सेवार, देवरा, केवाड़ी, खेसारी, बेमारी वगैरह। एकरा अलावे चार चाहे चार से अधिका अक्षर वाला शब्द में (हेहरपन, मेहतर आदि में) एकार वाला क्रियापद के बनल प्रेरणार्थक आ कृदन्त रूप में (देखल-देखाई, देखावल, पेरल-पेरावल, पेरवावल, पराई, घेरल-घेराई, घेराव, घेरावल, घेरवावल), पूर्वकालिक क्रिया (देखाऽके, सुनाऽके, समेटाऽके), संयुक्त क्रिया का पहिली क्रिया के आदि आ मध्य में (देखाऽदिहल, हुरपेटाऽईल), बे उपसर्ग वाला शब्द के 'बे' के उच्चारण आदि में ह्रस्व 'ए' होला- बेकऽहल, बेदम, बेबस, बेरहम वगैरह।

***अपवाद***- जोर देवे खातिर कबो-कबो 'बे' के अतिदीर्घ उच्चारण कईल जाला-बेऽकार, बेकहल, बेदिल वगैरह। अति ह्रस्व 'ए' सहायक ध्वनि ह। एकर अस्तित्व ढेबुआ, केचुआ जइसन शब्दन में पावल जाला। अति ह्रस्व 'ए' के उच्चारण में जीभ के नोख निचला मसूड़ा के छुअत प्रतीत होले। अतिह्रस्व 'ए' के उच्चारण शब्द के अंत में ना होखे।

***'एँ'***

डॉ॰ उदयनारायण तिवारी के अनुसार 'एँ' अत्यधिक विवृत स्वर ह आ एकर उच्चारण स्थान उहे ह, जवन मूल स्वर 'एँ' के ह। असल में एकर व्यवहार प्रत्यय के रूप में होला। प्राचीन भोजपुरी में जोर देवे खातिर, एकरा साथे हि अव्यय के व्यवहार होत रहे, बाकी आधुनिक भोजपुरी में एकर लोप हो गइल बा। प्रत्यय-रूप में शब्द के अंत में प्रयुक्त भइला पर ई अतिह्रस्व ए अउर ह्रस्व ए के रूप धारण कर लेवेला।

***ए,ओ,औ***

ए, ऐ, ओ, औ चारो संयुक्त स्वर (संधिस्वर) हवेस जवना में 'ए' अउर 'ओ' गुण स्वर बा आ 'ऐ' अउर 'औ' बृद्धिस्वर। भोजपुरी उच्चारण में 'ए' अउर 'ओ' गुण स्वर के ह्रस्व दीर्घ उच्चारण प्रसंग आ प्रयोक्ता भेद के अनुसार पावल जाला। मतलब एह दूनों गुण स्वर वर्ण के अस्तित्व बा बाकिर 'ए' अउर 'औ' वृद्धि स्वर वर्ण के अस्तित्व भोजपुरी में नइखे।

ए, ऐ, ओ, औ चारो संयुक्त स्वर सन्ध्यक्षर हवे स जवना के उत्पत्ति दू स्वरन के संयोग से भइल बा। वैदिक काल में ए, ऐ, ओ, औ के उच्चारण अइ, आइ, अउ अउर आउ के समान रहे। डॉ॰ शुकदेव सिंह

के अनुसार संस्कृत काल में 'ए' अउर 'औ' दूगो के अस्तित्व रह गइल जवना के उच्चारण 'अइ' अउर 'अउ' हो गइल। पालि, प्राकृत आ अपभ्रंश काल में एह 'ऐ' आ 'औ' के अस्तित्व लगभग समाप्त हो गइल रहे। 'भोजपुरी में 'ऐ' के उच्चारण 'अएँ' आ 'अइ' अउर 'औ' के उच्चारण 'अउ' आ 'अव' हो गइल बा, जइसे-मैल-मइल, जैसे- जइसे, कैसे-कइसे, भैया-भइया, कैलाश-कएलास, मैदा-मएँदा, बैल-बएल, कौआ-कउआ, दौड़-दउर, कौन-कवन, जौन-जवन वगैरह। भोजपुरी में 'औ' के उच्चारण तीन स्वर के मेल 'अउअ' के रूप में भी बा, जइसे- मौत-मउअत वगैरह।

एह तरह से भोजपुरी में एह 'ऐ' अउर 'औ' स्वर के लिपि-चिह्न अनावश्यक बा काहेकि एह के उच्चारण में दू स्वरन के अलग-अलग अस्तित्व सुरक्षित बा। ओइसे हिन्दी के प्रभाव के कारण आधुनिक भोजपुरी में 'ऐ' अउर 'औ' लिपि चिह्न के प्रयोग हो रहल बा।

### अनुनासिक स्वर

***अँ, आँ, इं, ईं, उं, एं, ओं***

भोजपुरी में अएँ (ए) के छोड़ के बाकी स्वर के अनुनासिको रूप पावल जाला। इनकर उच्चारण स्थान उहे रहेला बाकी कोमल तालु आ काकल कुछ नीचे झुक जालें। ई अनुनासिक स्वर अर्थ भेदक हवेस। मतलब अनुनासिक स्वर से अर्थ में बदलाव आ जाला, जइसे-तागा (डोरा)-ताँगा (घोड़ा गाड़ी), विधना(विधाता)-विंधना (छेदल), खाटी-(चारपाई), खाँटी-(खरा), गाज-(फेन), गाँज-(ढेर), पूछ-(पूछल

क्रिया), पूँछ (जानवर के पोंछ), गोड़-(पैर), गोंड़-(एगो खास जाति), भाग-(हिस्सा) भाँग-(नशा के वस्तु) वगैरह।

### व्यंजन के उच्चारण संबंधी विशेषता

क् से ह् तक भोजपुरी में बत्तीस गो मूलं व्यंजन ध्वनि बा जवना के उच्चारण स्वर के सहायता से होला। एह में टवर्गी 'ण्' आ ऊष्म 'श्' अउर 'ष्' के अस्तित्व नइखे। ण्, श, के स्थान पर न् आ स् व्यंजन के उच्चारण होला आ 'ष' के स्थान पर प्रायः 'ख' के उच्चारण होला। एकरा अलावे भोजपुरी में प्रायः 'ल' के स्थान पर 'र' व्यंजन के उच्चारण पावल जाला। जवना वजह से भाषाविद लोग भोजपुरी में 'न् स् र' ध्वनि केन्द्र के भाषा मनले बा। जइसे-कान (कर्ण), सोना (स्वर्ण), सांत (शांत), गनेस (गणेश), बाम्हन (ब्राह्मण), केरा (केला), नरियर (नारियल), कपार (कपाल), अंगुरी (अंगुली), गारी (गाली), पीतर (पीतल), धूर (धूल), मछरी (मछली), पुतरी (पुतली) वगैरह। अइसे मागधी सहित हिन्दी आदि अन्य आधुनिक भारतीय आर्यभाषा के प्रभाव से आधुनिक भोजपुरी में ण्, श्, ष् आ ल् व्यंजन के प्रयोग खूब हो रहल बा।

*क्ष,त्र,ज्ञ*

प्राचीन भोजपुरी में क्ष्, त्र्, ज्ञ् व्यंजन के लिपि-चिह्न आ ओकर उच्चारण अस्तित्व नइखे। संस्कृत, हिन्दी वगैरह भाषा के प्रभाव से आधुनिक भोजपुरी के तत्सम, तद्भव शब्दन में एह ध्वनि चिह्न के प्रयोग हो रहल बा। अइसे एह तीनो मूल संयुक्त व्यंजन के उच्चारण में ध्वनि परिवर्तन के साथ कहीं-कहीं एक आ कहीं-कहीं दू गो स्वतंत्र व्यंजनन के

अस्तित्व पावल जाला आ ओकर उच्चारण स्थान ओह स्वतंत्र व्यंजनन के उच्चारण स्थान होला जइसे:-**'क्ष'**-परीक्षा-परीच्छा, शिक्षा-सिच्छा, सीख, क्षत्र-छतर, कक्षा-कच्छा, साक्ष्य-साख, पक्ष-पख, नक्षत्र-नछत्तर, भिक्षा-भिच्छा, भीख, वगैरह। **'त्र'**-पत्र-पतर, क्षत्र-छतर, पुत्र-पुतर, इत्र-इतर, पवित्र-पवितर, विचित्र-विचितर वगैरह। **'ज्ञ'**-संज्ञा-संग्या, विज्ञान-बिग्यान, ज्ञान-ग्यान, ज्ञानी-ग्यानी वगैरह।

अइसे संस्कृत-हिन्दी वगैरह भाषा के प्रभाव से आधुनिक भोजपुरी के तत्सम आ तद्भव शब्दन में क्ष,त्र, ज्ञ के प्रयोग कइल जा रहल बा। ऱ्ह, ल्ह, न्ह, म्ह वगैरह संयुक्त व्यंजन सहित क्क, म्म, ल्ल, प्प वगैरह द्वित्व चाहे युग्मक व्यंजन उच्चारण भोजपुरी ध्वनि प्रकृति के आपन विशेषता ह।

## बोध प्रश्न

### वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. **'उ' कवन वर्ण ह।**

   (क) व्यंजन वर्ण (ख) स्पर्श व्यंजन वर्ण

   (ग) दीर्घ स्वर वर्ण (घ) ह्रस्व स्वर वर्ण

2. **भोजपुरी में मूल व्यंजन वर्ण के संख्या केतना बा।**

   (क) बतीस (ख) चउसठ

   (ग) पचास (घ) पचीस

**3. कवर्ग के उच्चारण स्थान ह।**

(क) दाँत (ख) कंठ

(ग) ओठ (घ) तालु

## लघु उत्तरीय प्रश्न

1. 'ध्वनि' का ह। एकर कए गो भेद होला।
2. वर्ण के परिभाषा देत ओकरा भेदन के बारे में बताईं।
3. स्वर वर्ण चाहे व्यंजन वर्ण के परिभाषित करत उनका भेदन के उदाहरण सहित परिचय दीं।

## दीर्घ उत्तरीय

1. वर्ण के परिभाषा देत भेजपुरी के स्वर आ व्यंजन वर्ण के बारे में बताईं।
2. भोजपुरी वर्ण सब के उच्चारण स्थान के बारे में फरिआ के लिखीं।

अध्याय 2

# शब्द विचार

भोजपुरी, मैथिली, हिन्दी वगैरह भाषा के व्याकरण में शब्द के सामान्य परिभाषा पावल जाला कि ध्वनि (वर्ण) चाहे ध्वनियन (वर्णन) के मेल से बनल अर्थबोधक ध्वनि चाहे वर्ण समुदाय के शब्द कहल जाला। शब्द अकेले आ कबो आउर शब्दन के साथ मिल के आपन अर्थ उजागर करेला।

## शब्द के प्रकार

मूल, बनावट, रूपान्तर, प्रयोग वगैरह के आधार पर शब्द के कई प्रकार में बाँट के अध्ययन कइल जाला, जइसे-मूल के आधार पर भोजपुरी शब्दन के पाँचगो प्रकार बा-ठेठ, ततसम्, तद्भव, देशज आ विदेशज।

**ठेठ शब्द**- भोजपुरी के ठेठ शब्द ओह शब्द के कहल जाला जवन भोजपुरी छोड़ के आउर भाषा में ना पावल जाय। एह ठेठ शब्दन के देशज आ क्षेत्रीय शब्द भी कहल जाला, जइसे-झाँखी, थूक, छाल, बंडेरी, ढेंकी, पठरू, धुरखुरा वगैरह।

**ततसम् शब्द**- 'ततसम्' शब्द तत् आ सम के मेल से बनल बा। तत् माने ओकरा आ सम माने समान मतलब ओकरा (संस्कृत) शब्दन के समान शब्द के प्रयोग जब भोजपुरी में होला ओकरा के तत्सम शब्द कहल जाला, जइसे-मन, आज्ञा, कमल, गीत, नगर, फल, भय वगैरह।

**तद्भव शब्द**- तद्भव शब्द 'तत्' आ 'भव' के मेल से बनल बा। तत् के अर्थ होला ओकरा आ भव के अर्थ होला उत्पन्न भइल चाहे विकसित भइल। एह तरे संस्कृत ाब्दन से विकसित भइल शब्दन के तद्भव शब्द कहल जाला जइसे-अँगोछा (सं॰ अंगोञ्छ), आग (अग्नि), आठ (अष्ठ), उचाट (उच्चाट), खजूर (खर्जूर), खीर (क्षीर), घंटी (घंटिका), जीभ (जिह्वा), ताँत (तन्तु), दही (दधि), दूध (दुग्ध), धरती (धरित्री), हाथ (हस्त), काम, करम (कर्म), मीठ (मिष्ठ), धाम (धर्म) वगैरह।

**देशज ( देशी ) शब्द**- भोजपुरी के मौलिक शब्दन के देशज चाहे ठेठ शब्द कहल जाला, जइसे-बाप, खोंता, जूता, सोंटा, टीक, छान्ही, मरेठा, चाभुक, लोटा बगैरह।

**विदेशज** (विदेशी)- अंगरेजी, अरबी, फरसी वगैरह विदेशी भाषा के शब्द जवन भोजपुरी में प्रयुक्त होला, ओकरा के विदेशज कहल जाला, जइसे-खुदा, नमाज, सरकार, खून, गवाह, शायरी, अंगूर, चुकन्दर, चीलम, शराब, गुलाब, गरदन, जान, दिमाग, कमीज, वगैरह (फारसी), अल्ला, ईद, कुरान, गुनाह, फकीर, जमादार, इंसाफ, कानून, जमानत, नकल, कागज, किताब, अनार, अमरूद, अफीम, कसाई, (अरबी), चर्च, पोप, कलक्टर, अपील, पास, फेल, टिकट, पोस्ट-ऑफिस, कोट, टॉफी, यूरिया वगैरह (अंगरेजी)।

रचना चाहे बनावट के आधार पर शब्द के तीनगो भेद होला- **रूढ़, यौगिक** आ **योगरूढ़** ।

**रूढ़**- जवना शब्द के खंड के कवनो अर्थ ना होय, ऊ रूढ़ शब्द कहल जाला, जइसे-घर, गाछ, फर, डर, काम, नाम, धाम, चाम, पर वगैरह। घर के 'घ' आ 'र', गाछ के 'गा' आ 'छ', फर के 'फ' आ 'र' के अलग से कवनो अर्थ ना होखे।

**यौगिक**- जवना शब्द का खंड के अलग-अलग अर्थ होय, ऊ यौगिक शब्द कहल जाला, जइसे - मालगोदाम, भनसाघर, भंडारघर, डाकघर, पुलिसचौकी वगैरह। एह में माल आ गोदाम, भनसा आ घर, भंडार आ घर, डाक आ घर के अलग-अलग अर्थ बा।

**योगरूढ़**- जवन शब्द यौगिक भइला के बावजूद अर्थ के विचार से अपना सामान्य अर्थ के छोड़ के कवनो परम्परा से विशेष अर्थ के परिचायक होय, ऊ योगरूढ़ कहल जाले, जइसे- पनसोखा (इन्द्रधनुष), हरधर (बलराम) वगैरह।

रूपान्तर के आधार पर शब्द के दूगो भेद होला- विकारी शब्द आ अविकारी शब्द।

**विकारी शब्द**- जवना शब्द के रूप लिंग, वचन, कारक, काल आ पुरुष के अनुसार बदल जाय, ऊ विकारी शब्द कहाला। संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया आ विशेषण विकारी शब्द ह।

**अविकारी शब्द**- जवना शब्द के रूप लिंग, वचन, काल पुरुष, कारक के अनुसार ना बदले, ऊ अविकारी शब्द कहाला जइसे-अव्यय, क्रियाविशेषण, विभक्ति, परसर्ग समुच्चयबोधक, संबंध बोधक, विस्मयादि-बोधक अविकारी शब्द ह।

## बोध प्रश्न

### वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. 'झाँखी' भोजपुरी के कइसन शब्द ह।

(क) तत्सम (ख) तद्भव

(ग) ठेठ (घ) विदेशी

2. 'भनसाघर' भोजपुरी के शब्द ह।

(क) योगरूढ़ (ख) रूढ़

(ग) मौखिक (घ) यौगिक

3. अविकारी शब्द के कोटि में आवेवाला शब्द ह।

(क) क्रियाविशेषण (ख) संज्ञा

(ग) क्रिया (घ) सर्वनाम

### लघु उत्तरीय प्रश्न

1. शब्द के परिभाषा देत बनावट के आधार पर शब्द-भेदन के परिचय दीं।
2. मूल के आधार पर शब्द भेदन के उदाहरण सहित परिचय दीं।
3. रूपान्तर के आधार पर शब्द-भेदन के परिचय दीं।

### दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. शब्द के परिभाषित करत ओकर विविध प्रकार के उदाहरण सहित परिचय दीं।

## सहचर शब्द

सहचर शब्द के भोजपुरी में बहुते बा। एह के दूगो रूप भोजपुरी में प्रचलन में बा-समानार्थ बोधक सहचर आ विपरीतार्थक बोधक सहचर। एह के कुछ सूची नीचे दिहल जा रहल बा।

### समानार्थ बोधक सहचर

आदर-मान, लकड़ी-काठी, कपड़ा-लाता, इज्जत-पानी, घर-दुआर, रूपया-पइसा, बाल-बच्चा, घास-पात, पता-ठेकान, पुरखा-पुरनिया, धइल- धरावल, नेह-नाता, कनिया-बहुरिया, किन-बेसाह, नेग-चार, बीआ-बाल।

### विपरीतार्थ बोधक सहचर

अइसहीं कुछ विपरीतार्थ बोधक सहचर शब्द बांड़न सँ। एकरो लमहर सूची बा। नीचे कुछ उदाहरण दिहल जाता-

लेन-देन, ऊँच-नीच, बनल-बिगड़ल, आगा-पाछा, धनी-गरीब, आकाश-पताल,, हकासल-पियासल, लरम-गरम, सहयोगी-सहचर, कागज-पत्तर, दाना-पानी, इंटा-खपड़ा, रकम-पताई, खेत-खरिहान, पथ-पानी, साँप-गोजर, कुता-बिलाई, सूझ-बूझ, दूध-दही, जर-जमीन, हारल-थाकल, फूल-पत्ती इत्यादि।

भोजपुरी में कुछ आनुप्रासिक सहचर शब्द बाड़न सँ। एकर कुछ उदाहरण बा-

बोहनी-बट्टा, काम-धाम, अखोर-बखोर, हरवा-हथियार,

बर-बरिआत, पर-पाहुन, चासा-बासा, चिरई-चुरूंग, धूम-धड़ाका, तड़क-भड़क, आनि-बानी, टेढ़-मेंढ़ इत्यादि।

## कुछ विशेषार्थ बोधक सहचर

बोल-चाल, सेवा-खरचा, आगा-पाछ, अह-जह, तगड़-बगड़, अकट-बहेर, आउँज-गाउँज इत्यादि।

## बोध-प्रश्न

**1. नीचे लिखल के सहचर शब्द बनाईं।**

नया .....

भरल .....

उधार .....

पोथी .....

पता .....

घर .....

दूर .....

बूढ़ .....

नीमन .....

ऊँच .....

आकाश .....

आइल .....

दाना .....

रकम .....

लरम .....

आग .....

हरवा .....

आऊँज .....

तगड़ .....

खेवा .....

**2. नीचे लिखल में जे ठीक होखे, ओपर चिह्न ( ✓ ) लगाईं।**

गाछ-पौधा / बिरिछ / बगीचा / ताड़ /

उल्टा / सोझा / सीधा / टेढ/ जमीन / कुदाल /

बोल / बात / खान / चाल / माला / धप धप

**3. नीचे लिखल कवना तरह के सहचर शब्द ह।**

अकट-बहेर .....

धुँआ-धुकुर .....

खेत-खरिहारन .....

पर-पाहुन .....

मर-मिठाई .....

**4. अपना पाठ्य पुस्तक से दस गो सहचर शब्द चुन के लिखीं।**

..... ..... ..... .....

..... ..... ..... .....

## पर्यायवाची शब्द

कुछ शब्द अइसन होलेस, जवना के एके गो अर्थ वाला एह सब के के पर्यायवाची या समानार्थी शब्द कहल जाला।

इहाँ कुछ पर्यायवाची शब्द दिहल जाता-

मेघ - घटा, बदरी, बादल

रसरी - रस्सी, जोर, जेवर,

खम्हा - खंभा, थुनी,

सूरूज - सूरज, गोसाईं, आदित

छान्ह - छप्पर, छान्ही

आँख - नजर, नयन, नैन, चितवन

गरदन - गर्दन, घेंट, नट्टी

गोड़ - पैर, चरण, टाँग, टँगड़ी

गाछ - पेड़, विरिछ

जजात - फसल, फसिल, टासिल

डाढ़ - डाल, डाऱ्ही, डेहुँगी

नियरा - नगीच, नजदीक, भीरी, लगे

चिरई - चिड़िया, पखेरू, पंछी

चाँद – चनरमा, चन्दा

बेयार – हवा, बेतासि

मेहरारू – औरत, जनाना, जनीजात

जोरू – मेहरारू, पत्नी, घरनी, मेहर, धनिया

बेटा – पुत्र, पूत, पूता

लइकी – लड़की, छंउड़ी, बेटी, बिटिया, धिया

लइका – लड़का, छौंड़ा, टेल्हा, लरिका, बेटा

बछरू – बाछा, बछड़ा, लेरू

बूता – बल, काबू, तागद, परभूता

कुइयाँ – इनार, कुआँ

गोजी – लाठी, लउर,

डंटा – लबरा, पैना, सोटा

## बोध प्रश्न

**1. नीचे लिखल में बताईं कि कवन शब्द कवना के पर्यायवाची ह।**

1. मेघ, रसरी, निउरा, सोझा, सामने, सुरूज, चनरमा, नजर, पंछी, बिजुरी, लइका, टाँग, जोरू, घरनी, मुन्हार, गदबेर, लबेदा, पैना, चारपाई, खटिया, इनार, कुइआँ।

..... ..... ..... ..... ..... .....

..... ..... ..... ..... ..... .....

..... ..... ..... ..... ..... .....

..... ..... ..... ..... ..... .....

**2. सही पर ( ✓ ) निशान लगाईं।**

दिअरी के पर्यायवाची शब्द ह-

देवाल/आन्ही/खटिया/दीआ/दूर/छप्पर

**3. नीचे दिहल शब्दन के दू-दू गो पर्यायवाची शब्द लिखीं।**

स्त्री - ....., .....

संतान - ....., .....

लइकी - ....., .....

फसल - ....., .....

पत्नी - ....., .....

दीवार - ....., .....

**4. बताईं नीचे लिखल कवन कवना शब्द के पर्यायवाची ह।**

गदबेर, लउर, बूता, बछरू, सटका, छेरी, चिरकुट, हरिअरी, जनानी, नगीचा, चिरई, पूत, टेल्हा, लरिका, कान्ही, बउखी।

## विपरीतार्थक शब्द

हिन्दीए अइसन भोजपुरियो में उल्टा अर्थ देवे वाला बहुते शब्द बा। कुछ उदाहरण नीचे दिहल गइल बा–

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अच्छा | – | खराब | ठंढा | – | गरम |
| बिअही | – | उघड़ी | समहर | – | एकहर |
| सोझा | – | अलोता | करिया | – | गोर |
| आगा | – | पाछा | लमहर | – | छोट |
| बाप | – | मतारी | बनल | – | बिगड़ल |
| आपन | – | दोसर | आइल | – | गइल |
| गलती | – | सही | मालिक | – | नोकर |
| राँड़ | – | एहवाती | छोट | – | बड़ |
| समेटाइल | – | छितराइल | नेकी | – | बदी |
| अन्हार | – | अँजोर | नीमन | – | बाउर |
| इमरित | – | जहर | ऊँचा | – | खाला |
| घटी | – | नफा | दहार | – | सुखार |
| अपजस | – | जस | ओदा | – | सूखल |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| वैरागी | – | गिरहस्त | मनभरू | – | ललाइल |
| अबर | – | बरियार | सतवंती | – | बेसवा |
| खिनउरी | – | देहगर | गहिर | – | छितनार |
| मोट | – | पातर | देश | – | परदेश |
| नगद | – | उधार | जनम | – | मरन |
| जुआइल | – | अजू | मीठ | – | तीत |
| अजुराह | – | फुरसताह | नकली | – | असली |
| नियरा | – | दूर | उखाड़ल | – | रोपल |
| निगचा | – | दूर | सेंकुरल | – | फइलल |
| बिऊहल | – | उसरल | आमदनी | – | खरच |
| बसल | – | उजड़ल | सोझ | – | टेढ़ |
| जिनगी | – | मउअत | जिऊतार | – | मुअतार |

## बोध प्रश्न

**बताईं**

1. खराब के विपरीतार्थक ह।

उघड़ी / अलोता / अच्छा

**2. नीचे लिखल के विपरीतार्थक शब्द लिखीं।**

एहवाती ..... दोसर .....

छितराइल ..... सही .....

अँजोर ..... जहर .....

जस ..... गिरहस्त .....

देहगर ..... मोट .....

तीत ..... छितनार .....

अजू ..... उधार .....

बिगड़ल ..... जिअतार .....

गरम ..... आइल .....

सुखार ..... जनम .....

**3. पर्यायवाची का ह, एक वाक्य में लिखीं।**

**4. नीचे लिखल शब्दन के दु-दु गो पर्यायवाची लिखीं।**

कुता, लइकी, फइल, साँझ, डंडा, घास, दीपक, खाट, सटका, मेहरारू, इनार, बेयार।

## श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्द

कुछ शब्द अइसन होला जे सुने में त एके जइसन लागेला, बाकिर ओकरा अर्थ में बहुत अंतर होला। अइसने शब्द के श्रुतिसम भिन्नार्थक कहल जाला। नीचे दिहल शब्दन से एकर अंतर साफ हो जाई।

1. गोर - साफ चमड़ा वाला
   गोड़ - पैर, टाँग
2. चवर - खेत के खाली क्षेत्र
   चँवर - पोंछ के आकार के बनल लम्बा चीज
3. जवर - साथ
   जवरा - पवनी-पसारी के मिले वाला अनाज के हिस्सा
4. छावरा - मछरी के छोट बच्चा
   छँवड़ा - लइका
5. तोर - तोहार
   तोड़ - एक तरह के पातर रसरी
6. दवड़ - जगह
   दउड़ - दउड़े के काम
7. पाट - नदी के चौड़ाई
   पाठ - पढ़े-लिखे के चीज

8. पाटी – खटिया के लम्बाई-चौड़ाई में लागल लकड़ी

   पाठी – बकरी के बिना बिआइल बच्चा

9. बीरी – पान के छोटा बीड़ा

   बीड़ी – सूखल लंबाई से बनल चीज़

10. वीर – बहादुर, बली

    बीड़ – छप्पड़ छावे के सामान

11. बास – बसेरा

    बाँस – एगो लम्बा मजबूत पौधा

12. भुसउल – भूसा राखे के जगह

    भुसकउल – बेकार के लमहर आकार

13. राड़ – उदण्ड

    रार – झगड़ा, तकरार

14. लवका – बादल में चमके वाली बिजुरी

    लउका – कद्दू

15. सवर – संयोग

    सबर – बड़हन भाग

16. हार – पराजय

    हाड़ –हड्डी

17. ठूरी – भूजल अनाज के बिना फूटल दाना

ठूढ़ी – ठुड्ढी

18. धोवा – मिल में धोआइल नया कपड़ा

धोई – छिलका निकला दाल

19. डोली – कनिया के ढोवे वाला सवारी

ढ़ोली – दू सई पान के संख्या

20. सोर – जड़

सोरी – पातर कंद

21. कोर – किनारा

कोरा – गोदी

22. कवर – खाये के एगो मात्रा

कवरा – कुत्ता के देवे वाला भोजन

23. कमर – डाँर

कम्मर – कम्बल

24. कतार – पाँती

कटार – एगो हथियार

## बोध प्रश्न

1. **नीचे लिखल शब्दन के विपरीतार्थक शब्द लिखी।**

| | |
|---|---|
| खाल ..... | पाछा ..... |
| तातल ..... | घिरना ..... |
| लमहर ..... | समहर ..... |
| करिआ ..... | बिगड़ल ..... |
| अँवासल ..... | दोसराइत ..... |
| नोकर ..... | विरीतार्थक ..... |

2. **नीचे दिहल शब्दन में से चुन के सही विपरीतार्थक पर ( ✓ ) निशान लगाईं।**

**उजर**–बिगड़ल / फइलल / करिआ / तातल / पाछा

**बाउर**– माहुर / घटी / रूखड़ / अकसरूआ / नीमन

**लगे**– नियरा / सगही / पिछुआर / गलती / राँड़

**गिरहस्त**– कोत / अपजस / वैरागी / सूखा / उसर

**अबर**–अस्थिराह / खोंढ़ / अनकर / बरियार / तंग

3. विपरीतार्थक शब्द चुनीं आ एह से एक-एक वाक्य बनाईं।

सकेत .....

पुन्न .....

बाय .....

दहार .....

करिआ .....

एहवाती .....

अन्हार .....

छितराइल .....

मजगूत .....

नया .....

अलोता .....

अकसरूआ .....

मालिक .....

गलती .....

## अनेकार्थक शब्द

कुछ शब्दन के अर्थ एक से जादा होला, अइसन शब्द अनेकार्थक कहाला। हिन्दीए के तरह भोजपुरियो में अइसन ढेर शब्द वाड़न स। कुछ उदाहरण नीचे दिहल जाता।

कल - समय के बारे में (कल-बीतल, कल-आवे वाला)
मशीन के पार्ट-पुर्जा, नल, कल-पुर्जा

कन - चाउर के टुकड़ा, कंद,

काग - एगो करिया चिरई, ठेपी

टाप - घोड़ा के पैर के आवाज, मछरी मारे के एगो सामान

पाग - चीनी गरम क के बनावल रस, पगड़ी, मुरइठा

पाल - नाव पर हवा के दिशा रोकेवाला बड़हन परदा, पालल

बीछी - बिच्छू, केरा के छोट पौधा

लीख - ढील (माथा में पड़े वाला), बैलगाड़ी के राह

सउरी - प्रसूति घर, एक तरह के मछरी

साम - मूसर के गोल लोहा के छल्ला, साँझ

चाल - चले के ढंग, आदत

सान - छूरी-कैंची के धार तेज करे वाला सामान, घमंड

चीक - मांस बेचे वाला, तीसी के बनल परदा।

एही तरह बहुत अइसन शब्द बा, जवना के एक अर्थ के अलावा आउरो अनेक अर्थ में प्रयोग होला।

## शब्दांश-उपसर्ग-प्रत्यय

कुछ शब्दांश अइसन होला जे कवनो शब्द के पहिले लग के ओकरा अर्थ में थोड़ा परिवर्तन क देला-ऊ **उपसर्ग** कहाला। कुछ शब्द जे कवनो शब्द के बाद में लग के ओकरा अर्थ में परिवर्तन क देला-ऊ **प्रत्यय** कहाला।

## उपसर्ग

ऊ शब्दांश जवन शब्द के पहिले लागेला। कबो-कबो प्रत्यय लगला से मूल शब्द में परिवर्तन हो जाला।

भोजपुरी में अन, अ, अति, पर, पु, कि, सुनर, उध, दु, कु, स, तर्, अव, अध, ना, भर, कम, बिन आदि उपसर्ग लागेला। जइसे-

अन-अनजान, अ-अथाह, बे-बेमन, बेमतलब, नि-निदरदी, कु-कुअन्न, स-सपूत, अध-अधमरू, भर-भरसक, भरपूर, कम-कमखोराक, कमजोर, बिन-बिनबोलावन इत्यादि।

## विदेशी भषन के उपसर्ग-

अल, खुश, बद, ला, सर, हम, इत्यादि-जइसे- अल- अलरजी, खुश-खुशहाल, बद-बदमाश ला-लावारिस, सर-सरकार, हम-हमजोली आदि।

अइसन ढेर उपसर्ग बा, जवन भोजपुरी में प्रयोग होला।

## बोध प्रश्न

1. शब्दांश का कहाला? उदाहरण के साथ लिखीं।

2. उपसर्ग आ प्रत्यय में का अंतर बा। समुझा के लिखीं।

3. नीचे लिखल उपसर्गन से शब्द बना के वाक्य में प्रयोग करीं।

   अध, सु, कम, दिन, स, कु, नि, हु, पर, बे, अन, कु, अ, भर।

4. नीचे कुछ विदेशी भषन के उपसर्ग बा, ओकरा से शब्द बनाके अपना वाक्य में प्रयोग करीं।

   दर - .....

   बद - .....

   हम - .....

   खुश - .....

   ला - .....

   सर - .....

5. नीचे लिखल उपसर्ग से बनल शब्दन में से उपसर्ग चुनीं।

   दाढ़ी - .....

   एरा - .....

   देशी - .....

आऊँ - .....

अउती - .....

आउत - .....

आरी - .....

आइन - .....

एलू - .....

खोर - .....